आधुनिक युग में बौद्ध धर्म की प्रासंगिकता

डॉ. मनोहर भी. येरकलवार
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग
डॉ. मधुकरराव वासनिक पी. डब्ल्यू.
एस. कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
नागपूर
Email : yerkalwarpws@gmail-com

प्राचीन भारत एवं मध्य एशिया में बौद्ध काल का एक गौरवशाली इतिहास रहा है । इसके बाद का काल अंधकारमय एवं विभिन्न सामाजिक समस्याओं से घिरा हुआ साबित होता है । विश्व में तमाम धर्म है मगर सभी मानव को मानवता की दृष्टि से देखने वाला एकमात्र बौद्ध धर्म ही है । आज के इस दौर में आधुनिक युग की बढ़ती हुई परिस्थिति को संवरने के लिए बौद्ध धर्म की नितांत आवश्यकता महसूस होती है । आज के युग में समाज व्यवस्था बहुत ही छिन्न दृ विछिन्न हो चुकी है । इस बिकी हुई समाज व्यवस्था को सही रास्ते पर लाने के लिए बौद्ध धर्म की नितांत आवश्यकता महसूस होती है । आज के इस वैश्वीकरण के दौर में व्यक्ति – व्यक्ति से दूर जाता हुआ दिखाई देता है । व्यक्ति स्वार्थी हो चुका है । वह सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार होता है । अपने नैतिक मूल्य और अपने समाज के प्रति उत्तरदायित्व को भूल गया है । मैत्री, बंधुता, एकता की भावना भी खो गया है । ऐसी स्थिति में व्यक्ति का नैतिक विकास करने के लिए गौतम बुद्ध द्वारा बताया गया धम्म मार्ग ही लाभकारी रहेगा । बुद्ध के अनुसार जो धर्म प्रज्ञा की वृद्धि करें, अर्थात जो धर्म सबके लिए ज्ञान के द्वार खोल दें, जो धर्म यह बताएं कि, केवल विद्वान होना पर्याप्त नहीं है । जो धर्म यह बताएं कि आवश्यकता प्रज्ञा प्राप्त करने की है । आज के इस वैज्ञानिक युग में मानवीय समाज के विकास हेतु प्रत्यक्ष ज्ञान और नैतिकता का होना बहुत आवश्यक है । तब जाकर समाज में मानवता प्रतिपादित होगा ।

भूमंडलीकरण के बढ़ते हुए इस प्रभाव से मानवीय मूल्य और अस्तित्व का रत होता जा रहा है । इस तरह से मानव के जीवन में विभिन्न तरह की समस्याएं निर्माण हो रहे हैं । मानव खुद को अच्छा समझने के दौर में सब कुछ भूल जा रहा है । बुद्ध धम्म की विचारधारा यही कहती है कि, कुछ मानने से अच्छा जानना बहुत जरूरी होता है । विश्व के अन्य मतवाले मानने पर ज्यादा जोर देते हैं । बुद्ध ने हर बात की चिकित्सा और तर्क करने को कहा है । अंत आज के इस वैज्ञानिक युग में बुद्ध धम्म के अलावा विश्व को कोई दूसरा विकल्प नहीं है । जिसने बुद्ध के धर्म को जाना, माना एवं जिसने अपने व्यवहार में बुद्ध धम्म को अपनाया और जीवन में उतारा है निश्चित ही उसकी प्रगति होती है । क्योंकि बुद्ध का ज्ञान प्रज्ञा, शील, समाधि, करुणा पर आधारित है । भगवान बुद्ध के अनुसार जो धर्म मैत्री की वृद्धि करें अर्थात जो धर्म यह बताएं कि प्रज्ञा भी पर्याप्त नहीं है । इसके साथ सील भी अनिवार्य है । जो धर्म यह बताएं कि प्रज्ञा एवं शील के साथ–साथ करुणा का होना भी अनिवार्य है । जो धर्म यह बताएं कि करुणा से भी अधिक मैत्री की आवश्यकता होती है । शील, सदाचार, झूठ नहीं बोलना, हिंसा नहीं करना, चरित्रवान होना, व्यसन मुक्त होना, दूसरों का भला सोचना, दूसरों का मंगल करना, हमसे किसी को भी हानि न पहुंचे तथा करुणा, प्रेम, दया इस गुणों से संपन्न होना चाहिए । यदि हम शील का पालन करें तो हमारा चरित्र विकसित होगा । नैतिकता एवं चरित्र एक दूसरे से संबंधित होते है । बुद्ध के अनुसार जब वह सभी प्रकार के सामाजिक भेदभाव को मिटा दे अर्थात जब वह व्यक्ति व्यक्ति के बीच की सभी दीवारों को बुझा दे तब

जाकर आदमी का मूल्यांकन किए तो उसका मूल्यांकन जन्म से नहीं कर्म से साबित होता है । जब वह व्यक्ति – व्यक्ति के बीच समानता के भाव की वृद्धि करें ।

नत्थि रागसमो अग्नि नत्थि दोससमो गहो ।
नत्थि मोहसमं जालं नत्थि तन्हासमा नदी ।।

आसक्ति जैसा अग्नि नहीं, द्वेष जैसा ग्रह नहीं, मोह जैसा जाल नहीं, तृष्णा जैसी नदी नहीं । इस धम्मपद के माध्यम से व्यक्ति के जीवन में आसक्ति द्वेष, मोह, तृष्णा नहीं होनी चाहिए । अगर यह सब व्यक्ति के जीवन में आते हैं तो व्यक्ति का विकास नहीं हो पाता । इसलिए आज के इस वैज्ञानिक तकनीकी काल में इन सारी चीजों से दूर रहना ही व्यक्ति के जीवन का आधार है ।

आज विश्व में आतंकवाद, दहशतवाद, नक्सलवाद जैसी हिंसा प्रधान विचारधाराओं ने व्यक्ति के जीवन को घेर रखा है । इसका भी कारण बुद्ध के विचारों की अनदेखी करना है । यह हमें नहीं भूलना चाहिए विश्व में लाखों लोगों की मौत का कारण यह हिंसावादी विचारधारा है । लाखों लोग इस हिंसा के कारण बेघर हो चुके हैं । और हजारों करोड़ों की संपत्ति की हानि इसी हिंसावादी विचारों से हुई है । इसी कारण आज विश्व को युद्ध की नहीं तो बुद्ध के विचारों की आवश्यकता है । हमें ध्यान में रखना होगा बुद्ध के नैतिक विचार ही मानव के मन व विचारों को योग्य दिशा दिलाने में समर्थ रहेगा । विश्व में होने वाली हिंसा, अशांति और सोहार्द के अभावो के कारणों की विचार करें तो इसका मूल कारण हमें पता चलेगा कि संपूर्ण विश्व के समस्त जीवन में निर्माण हो रहा नैतिक अध:पतन यही है । इसी कारण मानवतावादी विचारों का रत होता जा रहा है । आज के विश्व ने अपने बारे में ही सोचने वाला वर्ग तैयार हो चुका है । यह सामाजिक वर्ग दूसरों के प्रति अनुदार है । इस वर्ग के द्वारा विकास की कल्पना करना बिल्कुल ही संभव नहीं है ।"बाबासाहेब आंबेडकर ने भगवान बुद्ध को सामाजिक क्रांति कहते हैं । यह क्रांति फ्रेंच राज्यक्रांती जैसी नहीं थी, मगर इस धम्म के माध्यम से उस समय के जाती और वर्ण व्यवस्था पर बड़ा असर हुआ था ।"ह्म इस व्यवस्था ने समाज में नई चेतना और जागृति निर्माण की थी । इस धम्म ने समाज में समता, न्याय, स्वतंत्रता प्रदान की थी । इस तरह से बुद्ध के विचारों से तत्कालीन समाज का सर्वांगीण विकास हुआ था । तत्कालीन व्यवस्था की चर्चा विश्व के कोने–कोने में पहुंच चुकी थी । भगवान बुद्ध धम्म के विचारधारा से विश्व में शांति स्थापन हुआ था । इस तरह से आज के इस अशांत विश्व को शांत करने के लिए तथागत भगवान बुद्ध के धम्म के अलावा और कोई धर्म में यह ताकत नहीं है । फिर एक बार विश्व में शांति लाने के लिए बुद्ध धम्म की नितांत आवश्यकता साबित होती है ।

वर्तमान युग भले ही मनुष्य जीवन को भौतिक दृष्टि से सुखी एवं संपन्न बनाने में जुटा हुआ है । पर बुद्ध को भूल जाना संभव नहीं होगा । आज भी उन्हें मार्गदर्शक के रुप में संसार के सभी देशों में माना जाता है । बुद्ध के मानवतावादी विचारों को गहनता से पढ़ा जाता है । बुद्ध के विचारों में मनुष्य तथा समाज के उत्थान की बात सन्निहित है । उन्होंने मानवीय संसाधनों को सही तरह से उपयोग करने पर बल दिया है, ताकि आदमी स्वयं के प्रयासों से बहुमुखी विकास करने में सक्षम बन सके । बुद्ध ने सदा मानव जीवन का कल्याण कैसा हो, इंसान सुखी और प्रसन्न कैसा हो, समाज में समानता, भाईचारा, प्रेम, शांति और खुशहाली कैसे रहे, इस विषय में चिंतन किया है । वह मानते थे कि जब तक व्यक्ति प्रसन्न नहीं होगा, तब तक समाज, देश या विश्व प्रसन्न नहीं हो सकता । क्योंकि समाज व्यक्ति से ही बनता है । इसीलिए भगवान बुद्ध ने व्यक्ति को अपनी शिक्षाओं का मुख्य केंद्रबिंदु माना है ।

तकनीकी ज्ञान में हुए बदलाव से विश्व में परिवर्तन हो रहा है । इस भौगोलिक, सांस्कृतिक, परिवर्तन के माध्यम से शिक्षित वर्ग अपने आप में परिवर्तन लाने की क्षमता को बढ़ाने की ताकत रखते हैं

। लेकिन जो आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़ा वर्ग है जिसमें ज्ञान लालसा का अभाव है, जो समाज व्याप्त समस्याओं से जूझ रहा है, जिसमें अनुकूल परिस्थितियां निर्माण करने की ताकत नहीं है, ऐसे लोगों के हितों में तकनीकी और वैज्ञानिक परिवर्तनों के कारण कटुता आ रही है ।"बौद्ध धम्म मानव समानता, उदारता, सहनशीलता व स्वतंत्रता के सिद्धांतों पर आधारित था । फलत: सामाजिक व्यवस्था और धार्मिक जीवन को लोकतंत्रात्मक सिद्धांतों पर आधारित करने की कोशिश की गई थी । "इस तरह से उत्तर वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था के माध्यम से मानवीय समाज में भिन्न भिन्न प्रकार के समस्यायें निर्माण हुए । इस तरह से वह समाज विभिन्न प्रकार के जातिवाचक समस्याओं से ग्रसित था । उस समाज की समस्याओं का निर्मूलन करने का कार्य भगवान बुद्ध ने अपने बुद्ध धम्म के द्वारा किया है । जब तक हमें प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं होगा तब तक सच सामने नहीं आएगा एवं आधुनिक युग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु सकल ज्ञान आवश्यक होता है । नैतिकता ही बुद्ध धम्म है । बुद्ध धम्म यह जन–जन का धर्म है । संसार के सभी धर्मों में मनुष्य के आचरण के लिए नियम है । बुद्ध ने मनुष्य के अच्छे आचरण के लिए चार आर्यसत्य, आठ अष्टांग मार्ग और पंचशील बताए हैं । बुद्ध धम्म नैतिक प्रणाली है । नैतिकता ही धर्म है और इसलिए बौद्ध धम्म यह अन्य धर्मों से अलग है । अन्य धर्मों में और बौद्ध धर्मों में मूलभूत तफावत यह है कि, अन्य धर्मों में ईश्वर को महत्वपूर्ण स्थान है । लेकिन बुद्ध धर्म में ईश्वर को स्थान नहीं है । बुद्ध ने ईश्वर के अस्तित्व को नकारा है । बुद्ध के धम्म का केंद्र आदमी है । गौतम बुद्ध ने मानव के कर्मों को नैतिक संस्थान का आधार माना है और सभी संस्कार को अनित्य बताया है । भगवान बुद्ध के अनुसार धम्म यानी धर्म वही है जो सबके लिए ज्ञान के द्वार खोल दें, और उन्होंने यह भी बताया कि केवल विद्वान होना ही पर्याप्त नहीं है । 'विद्वान वही है जो आपने की ज्ञान की रोशनी से सब को रोशन करें' धर्म के लोगों की जिंदगी से जोड़ते हुए बुद्ध ने बताया कि, करुना, शील और मैत्री अनिवार्य है ।

सामाजिक भेदभाव मिटाने के लिए भी बुद्ध ने प्रयास करते हुए बताएं कि, लोगों का मूल्यांकन जन्म के आधार पर नहीं कर्म के आधार पर होना चाहिए । बुद्ध धम्म का एक महत्वपूर्ण वैशीष्ट यानि बुद्ध ने आत्मा का अस्तित्व को नाकारा है । अन्य धर्मों में आत्मा का अस्तित्व को मान्य किया है, और आत्मा को मोक्ष प्राप्ति होती है ऐसे ही बोला गया है । लेकिन यह दोनों बातों को बुद्ध ने नाकारा है । बुद्ध धर्म विज्ञाननिष्ठ है । उसमें अंधश्रद्धा और अंधविश्वास को कोई स्थान नहीं है । बुद्ध के धम्म का केंद्र बिंदु मनुष्य है । इस पृथ्वी पर रहते हुए आदमी का आदमी के प्रति क्या कर्तव्य होना चाहिए, उसकी पहचान है बौद्ध धर्म । बौद्ध धर्म सारे मानव जाति के कल्याण के लिए है । वर्तमान विश्व को सुख, शांति चाहिए तो बुद्ध को अपनाना ही पड़ेगा । संपूर्ण विश्व में चारों और अशांति फैली हुई है । इस अशांति में मानवीय समाज बेचौन हो रहा है । विश्व में सब तरह से आतंकवाद, नक्सलवाद, अराजकता फैल रही है । वैसे समाज को इससे बचने के लिए भगवान बुद्ध का तत्वज्ञान अपनाना पड़ेगा । जैसे विश्व के कुछ देशों ने भगवान बुद्ध के तत्व ज्ञान को अपनाए हैं और खुद को श्रेष्ठ साबित करने का प्रयासरत है । विश्व के जिन देशों ने बौद्ध धर्म को अपनाया वही देश आज विकास में अग्रसर है और वही देशों द्वारा बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार करते हुए नजर आ रहा है । इस तरह से बुद्ध धम्म का प्रभाव सामाजिक जीवन पर दिखाई देता है ।

निष्कर्ष :–

आज के इस आधुनिक युग में नैतिकता का पूर्ण रूप से विकास नहीं हो सका है । हमें मानव मानव के बीच की दीवार को खत्म करना होगा । आपस में समता, स्वतंत्र, बंधुता, मैत्री, न्याय उत्पन्न करना होगा । तब जाकर मानवीय समाज का सही तरह से विकास हो सकता है । जिसका एकमात्र मार्ग बुद्ध का धर्म ही है । नैतिक विकास हेतु बौद्ध धर्म आज के वैश्विक समाज की नितांत आवश्यकता है ।

इस विश्व को भगवान बुद्ध के नैतिक विचार ही सुरक्षित रख सकता है । मानवीय समाज के विकास में मनुष्य के भौतिक कार्यों के साथ–साथ व्यक्ति के मन के व्यवहार भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । इसलिए अपने मन को सुसंस्कृत करना यह प्रत्येक मनुष्य का प्रथम कार्य होना चाहिए । इसके लिए बौद्ध धर्म के सत्य, अहिंसा, न्याय, दया, दान, शुचिता, मैत्री, करुना, मृदुता, साधुता, माता – पिता एवं गुरुजनों की सेवा सुश्रुषा करके उनके साथ उचित व्यवहार करना ही मानवता का प्रमुख तत्व है । आज के इस दौर में हमें युद्ध नहीं बुद्ध की जरूरी है । इसीलिए समानतावादी समाज निर्माण हेतु 'बहुजन हिताय – बहुजन सुखाय' प्रज्ञा, शील, करुणा इन्ही मानवतावादी मूल्यों पर आधारित समाज की निर्मिती करना ही आधुनिक समाज में बुद्ध धम्म की प्रासंगिकता है ।

संदर्भ :–

- बापट, भ. ग. (२०१२), 'धम्मपद पाली गाथा आणि अर्थकथा', सुगत प्रकाशन, नागपुर. पृष्ठ क्र. १२२
- पाटिल, निरंजन (२००६), 'बुद्ध तत्वज्ञान आणि प्रबोधन क्रांति', पद्मपानी प्रकाशन, ठाणे. पृष्ठ क्र. ३३
- उपाध्याय, सौरभ (२०१२),'भारत में सामाजिक परिवर्तन', इसीका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर. पृष्ठ क्र. ३०.